20

"मेमना योग्य है"

(5:1–14)

यीशु ने कहा कि पवित्र शास्त्र उसकी गवाही देता है (यूहन्ना 5:39)। यह बात प्रकाशितवाक्य सहित पुराने नियम पर भी लागू होती है और नये नियम पर भी। यीशु प्रकाशितवाक्य का "प्रमुख विषय है।"[1] रेअ समर्स ने प्रकाशितवाक्य पर अपने टीका का शीर्षक *वर्थी इज़ द लैंब* अर्थात मेमना योग्य है, रखा है। अपने परिचय में उन्होंने बताया है कि यह शीर्षक क्यों रखा गया है:

> शीर्षक से ... पुस्तक के केंद्रीय भाव का पता चलता है। परमेश्वर का छुड़ाने वाला मेमना अपने लोगों के जीवनों तथा इस पुस्तक के कार्य में प्रभुता करता है। अंत में वही परमेश्वर के काम और लोगों का विनाश करने की कोशिश करने वाली शक्तियों पर पूर्ण विजय पाता है। इस अद्‌भुत नाटक के दृश्य का परदा गिरने पर पाठक इतना भावुक हो जाता है कि वह परमेश्वर के आगे भक्तिपूर्वक सिर झुका देता है और मन को छू लेने वाले गीत गाने वालों के साथ हो लेता है, "मेमना जो वध किया गया था और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें परमेश्वर के लिए छुड़ाया है, धन और आदर और महिमा और शक्ति लेने के योग्य है।"[2]

समर्स द्वारा दोहराया गया गीत हमारे इस अध्ययन के लिए वचन पाठ अर्थात प्रकाशितवाक्य 5 पर आधारित है।

अध्याय 4 और 5 साथ-साथ चलते हैं। अध्याय 4 (जिसका अध्ययन हमने पिछले पाठ में किया था) सृष्टिकर्त्ता के रूप में परमेश्वर की आराधना पर केंद्रित है, जबकि अध्याय 5 छुटकारा दिलाने वाले के रूप में मसीह की आराधना की बातें बताता है। 5:1 वाले स्वर्गीय नाटक पर से परदा हटने पर सिंहासन मुख्य आकर्षण बना रहता है। प्राचीन, प्राणी और सात आत्माएं अभी भी थे (5:5, 6)। परन्तु अब दृश्य पर पूर्वाभास की हवा लटकती है।

"योग्य कौन है?" (5:1-4)

पत्री (आयत 1)

तुरन्त तनाव पैदा होने लगा। सिंहासन की ओर देखने पर, यूहन्ना ने "उसके दाहिने

हाथ में एक पुस्तक देखी,[3] जो भीतर और बाहर लिखी हुई थी और सात मुहर लगाकर बन्द की गई थी'' (आयत 1)। (सात मुहरों वाली पत्री का चित्र देख।) यह पुस्तक एक या दो डंडों पर लपेटी हुई कागज़ की एक लम्बी पट्टी अर्थात पत्रीनुमा होगी।[4] इस पत्री की दो विशेष बातें थीं।

पहले तो यह कि कागज़ के दोनों ओर लिखा हुआ था।[5] कागज़ आमतौर पर पेपिरस से बनता था। इसके लिए पेपिरस पौधे के भीतरी भाग को पतला छीलकर एक-दूसरे से जोड़ा जाता था। फिर दूसरी परत को पहली परत के ऊपर रखा जाता था। दोनों परतों को गोंद से जोड़कर दबा दिया जाता था। कागज़ सूखने के बाद इसे मुलायम करने के लिए रगड़ा जाता था। आमतौर पर कागज़ के एक ओर लिखा जाता था, क्योंकि बाहर लिखना कठिन होता था। यूहन्ना वाले दर्शन में पत्री के दोनों ओर लिखा गया था, शायद संदेश की *सम्पूर्णता* का प्रभाव देने के लिए।

दूसरा पत्री पर सात मुहरों से सील लगाई गई थी।[6] सदियों तक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों को मुहरों से सील किया जाता रहा है। (देखें यशायाह 29:11; यिर्मयाह 32:44; दानिय्येल 6:17; 12:4)। इकट्ठे किए गए या लपेटे गए दस्तावेज़ के किनारे पर गर्म लाख लगा दी जाती थी। फिर लाख के ठण्डा होने पर कोई छल्ला या धातु की बनी मुहर उस लाख पर लगा दी जाती थी। मुहर लगाने के तीन फायदे होते थे: इससे स्वामित्व की पुष्टि हो जाती थी तथा यथार्थता और सामान की सुरक्षा पक्की हो जाती थी।[7] इस बात से कि इस पत्री पर *सात* मुहरें लगी थीं, यह संकेत मिलता था कि इसे *पूरी तरह से* मुहरबंद किया गया है।[8] मुहरें तोड़े बिना किसी को पता नहीं चल सकता था कि उसके भीतर क्या है।

बहुत से लोग हैरान होते हैं, '' 'भीतर से और बाहर लिखी, सात मुहरों वाली पुस्तक' *है* क्या?'' टीकाओं में अलग-अलग अनुमानों को पढ़ना और भी चौंकाने वाला है[9], लगता है, जैसे पता ही नहीं चल सकता कि मुहर लगी उस पत्री में क्या था। इस उलझन को समझना कठिन है, क्योंकि अध्याय 6 के आरम्भ से हमें इस संदेश का विवरण दिया गया है। पहली मुहर खुलने पर श्वेत घुड़सवार आगे आया था, दूसरी मुहर खुलने पर लाल घुड़सवार; और इसी प्रकार अन्य मुहरों के खुलने पर अगले। यह स्पष्ट लगता है कि पत्री में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का शेष भाग यानी 6 से 22 अध्याय थे।[10]

खोज (आयतें 2, 3)

मंच पर एक बलवन्त स्वर्गदूत के कदम रखने से तनाव बढ़ गया। भौतिक और आत्मिक संसार में गूंजती आवाज़ से उसने चुनौती दी: ''इस पुस्तक के खोलने और उसकी मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है?'' (आयत 2ख)। AB में इस प्रश्न को विस्तार दिया गया है, ''पत्री को खोलने के योग्य कौन है? और इसकी मुहरें तोड़ने के लिए नियुक्त और नैतिक रूप से योग्य कौन है?''[11] मुहर खोलने के लिए केवल लाख तोड़ने से अधिक काम करना आवश्यक था यानी मुहर खोलने वाले ने उस दस्तावेज़ में लिखी बातों की ज़िम्मेदारी भी ली।

प्रश्न पूछे जाने के बाद देर तक खामोशी छाई रही होगी, जिसमें यूहन्ना जवाब की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके पास यह विश्वास करने का हर कारण था कि उस पुस्तक को खोलने के लिए कोई मिल ही जाएगा। उसे ''जो उसके बाद होने वाली हैं, उन सब को लिख'' (1:19ख) लेने का आदेश जो दिया गया था। इसके अलावा स्वर्ग में बुलाए जाने पर उससे कहा गया था, ''यहां ऊपर आ जा: और मैं वे बातें तुझे दिखाऊंगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है'' (4:1)। इस कारण हम यूहन्ना के सांस रोक कर किसी के आगे कदम बढ़ाने और उन प्रश्नों का उत्तर देने की कल्पना करते हैं, जो उसके मन में घूम रहे थे: ''मसीही लोगों का क्या होगा? क्या सब कुछ ठीक हो जाएगा? परमेश्वर सब कुछ ठीक *कैसे* कर सकता है?''

उदासी (आयतें 3, 4)

अंत में बड़े ही अफसोसजनक ढंग से यह स्पष्ट हो गया कि ''न स्वर्ग में, न पृथ्वी पर, न पृथ्वी के नीचे[12] कोई उस पुस्तक को खोलने या उस पर दृष्टि डालने के योग्य निकला'' (आयत 3ख)। ''स्वर्ग'' में स्वर्गदूत, साराप, करूब और मीकाइल जैसे महादूत होंगे। ''पृथ्वी पर'' वाक्यांश में बड़े-बड़े मसीही अगुओं, परमेश्वर के भक्त पवित्र लोगों और स्वयं यूहन्ना को शामिल किया गया होगा। ''पृथ्वी के नीचे'' बिछड़ी आत्माओं के संसार के लोग थे[13] और उसमें अब्राहम, मूसा, दाऊद, एलिय्याह और पौलुस जैसे परमेश्वर के प्रसिद्ध सेवक थे। उनके जितना बड़ा और भला भी पुस्तक को खोलने के योग्य नहीं था। कोई आगे नहीं बढ़ा।

उस समय यूहन्ना को लगा होगा कि जो वह जानना चाहता था, उसे वह कभी पता नहीं चल पाएगा। आश्चर्य नहीं कि उसने लिखा, ''और मैं फूट-फूटकर रोने लगा, क्योंकि उस पुस्तक के खोलने या उस पर दृष्टि करने के योग्य कोई न मिला'' (आयत 4)। यह वही शब्द है, जिसका इस्तेमाल लूका द्वारा यीशु के यरूशलेम पर रोने के विषय में किया गया था (लूका 19:41)। यह रोना शारीरिक पीड़ा के बजाय आंतरिक वेदना के कारण होता है। यूहन्ना अपने दुखी भाइयों और बहनों के कारण रो रहा था, क्योंकि उसे परमेश्वर की छुटकारे की योजना का पता नहीं चल सका था।

अपने आस-पास के पाप में खोए हुए संसार को देखकर, सही काम करने की कोशिश करने वाले दुखी लोगों को देखकर क्या हमें भी यूहन्ना की तरह ही लगता है? कुछ समय पहले मैंने एक संदेश का शीर्षक देखा था, जिसमें उस लगाव की कमी पर टिप्पणी की गई थी, जो कई बार हम दिखाते हैं: ''नरक की ओर जाते संसार में सूखी आंखों वाली कलीसिया।'' बुजुर्ग यूहन्ना को रोते हुए देखकर जान लें कि कुछ बातें ऐसी हैं, जिन के लिए परेशान होना अच्छा है।[14] ''रोने का समय'' होता है (सभोपदेशक 3:4)!

“तब मैंने ... मेमना खड़ा देखा” (5:5-7)

प्रताप से भरा सिंह (आयत 5)

यूहन्ना अधिक देर तक नहीं रोया, क्योंकि प्राचीनों में से एक ने उसे यह बताकर कि एक *था* जो योग्य था, उसे चुप करा दिया: “मत रो; देख, यहूदा के गोत्र का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है, उस पुस्तक को खोलने और उसकी सातों मुहरें तोड़ने के लिए जयवन्त हुआ है” (आयत 5)।

प्राचीन द्वारा इस्तेमाल किए गए शीर्षक मसीह से जुड़ी अभिव्यक्तियां थीं: “यहूदा के गोत्र का सिंह” हमें उत्पत्ति 49:8-11 की याद दिलाता है, जहां याकूब ने अपनी संतान को राजाओं का गोत्र बनाते हुए अपने पुत्र यहूदा को राज डंडा दिया था। “बाइबल के लेखक सिंह को सबसे शक्तिशाली और खतरनाक जीव के रूप में जानते थे,”[15] जिस कारण “यहूदा के गोत्र का सिंह” उस सबसे महान को कहा गया, जिसने याकूब के चौथे पुत्र की संतान होना था।

“दाऊद का मूल” शब्दावली हमें यशायाह 11 की याद दिलाती है, जिसमें “यिशै की जड़” की बात है (यशायाह 11:10; देखें आयत 1)। निश्चय ही यिशै दाऊद का पिता था। “दाऊद का मूल” वाक्यांश का मुख्य महत्व यह था कि मसीहा ने दाऊद के वंश में से आना था।[16]

यह ज़ोर दिया गया था कि यहूदा का सिंह और दाऊद का मूल “पुस्तक को खोलने के लिए जयवन्त हुआ” था। “जयवन्त हुआ” वही शब्द है, जिसे हमने सात कलीसियाओं के नाम पत्रों में बार-बार देखा यानी यह “विजय” के लिए यूनानी शब्द का क्रिया रूप है। वह विजयी हुआ था, जिस कारण वह पुस्तक खोलने के योग्य ठहरा।

आपने अनुमान लगा लिया होगा कि यह पद यीशु की बात करता है। मानवीय पक्ष को देखें तो यीशु यहूदा और दाऊद की संतान था (मत्ती 1:1, 3, 6, 17; इब्रानियों 7:14; प्रकाशितवाक्य 22:16)।[17] इसके अलावा वह “जयवन्त” भी था अर्थात उसने परीक्षा पर जय पाई; उसने शैतान की हर चाल पर जय पाई; उसने जीवन की निराशाओं पर जय पाई। परन्तु जैसा कि हम देखेंगे, वचन मुख्यतया मृत्यु पर यीशु की जय की बात करता है।

वध किया गया मेमना (आयत 6क)

यूहन्ना की आशाएं फिर जाग उठी थीं। सिंह को देखने की उम्मीद से उसने पीछे मुड़कर देखा, परन्तु उसे एक मेमना दिखाई दिया! “और मैंने उस सिंहासन और चारों प्राणियों और उन प्राचीनों के बीच में,[18] मानो एक वध किया हुआ मेमना खड़ा देखा[19]: उसके सात सींग और सात आंखें थीं; ये परमेश्‍वर की सातों आत्माएं हैं, जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं” (आयत 6)। (मानो वध किया हुआ मेमना खड़ा का चित्र देख।) यूहन्ना ने आश्‍चर्य से अवश्य पलकें झपकाई होंगी। उसने सोचा था कि भयभीत करने वाली उपस्थिति वाला कोई जीव देखेगा, परन्तु उसके सामने तो सबसे असहाय और हानि न

पहुंचाने वाला जीव खड़ा था।

अनुवादित शब्द ''मेमना'' का मूल अर्थ ''नन्हा मेमना'' है। दृश्य को समझने के लिए पहले अबोध मेमने की कल्पना करें, जो शायद अभी-अभी जन्मा है और उसकी टांगें लड़खड़ा रही हैं। फिर (यदि आपका मन माने) तो कल्पना करें, उस मेमने का गला कटा हुआ है, ''घाव खुला हुआ और अभी भी हरा है,''[20] उसकी छोटी-छोटी मुलायम ऊन उसके अपने ही लहू से रंगी हुई है।

''वध'' के लिए यूनानी शब्द *sphatto* है, जो खतरनाक मौत का सुझाव देता है। NEB में ''अपने ऊपर कटने के चिह्नों वाला'' है। हमारी मुख्य दिलचस्पी यूनानी शब्द में है, जिसमें इस खतरनाक मौत के *उद्देश्य* की बात है। डब्ल्यू. ई. वाइन ने लिखा है कि *स्फैटो* का अर्थ '' 'काटना, हत्या करना है' विशेषकर *बलिदान* के लिए, ...''[21]

आपने फिर अनुमान लगा लिया होगा कि काटा गया मेमना क्रूस पर मसीह का प्रतीक था। यीशु की बलिदान पूर्वक मृत्यु की बात करते हुए यशायाह ने उसकी तुलना ''वध होने'' के लिए ले जाए जाने वाले ''मेमने'' से की (यशायाह 53:7ख)। यूहन्ना बपस्मिा देने वाले ने यीशु की ओर इशारा करके कहा था, ''देखो, यह परमेश्वर का मेमना, जो जगत के पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29ख)। पतरस ने लिखा है कि हमारा ''छुटकारा ... निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ'' है (1 पतरस 1:18, 19)।

इस बात को न भूलें कि मेमना *खड़ा* था। उसे वध किया गया था, परन्तु फिर भी वह *उठ गया* था। यीशु ने पहले यूहन्ना को बताया था, ''मैं मर गया था और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूं'' (1:18ख)। जिस कारण वह खड़ा होकर, पुस्तकों को खोलने के लिए तैयार था।

''मरियम के नन्हे मेमने'' को देखकर[22] एक बार हमें फिर याद आता है कि परमेश्वर के ढंग हमारे ढंगों जैसे नहीं हैं (यशायाह 55:8)। बुराई के विरुद्ध युद्ध में हो सकता है कि हम दूसरों को घायल करने वाले खूंखार सिंह को प्राथमिकता दें परन्तु परमेश्वर ने हमें ''बलिदान का मेमना'' दिया ''जो दूसरों के घाव अपने ऊपर ले लेता है''[23] हमें लग सकता है कि कसे हुए मुक्के की आवश्यकता है, परन्तु परमेश्वर हमें बताना चाहता है कि जीत के लिए छिदे हुए हाथों की आवश्यकता है![24]

शक्तिशाली मेमना (आयतें 6ख, 7)

अब तक यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि मेमना उतना असहाय नहीं था, जितना आरम्भ में लगता था। ''उसके सात सींग और सात आंखें थीं; ये परमेश्वर की सातों आत्माएं हैं, जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं'' (आयत 6ख)। सींग शक्ति का प्रतीक थे (देखें व्यवस्थाविवरण 33:17)। *सात* सींग मेमने की *सर्वशक्तिशालिता* को दिखाते थे। उसकी आंखें भी थीं, अर्थात वह सब कुछ देख सकता था, यानी *सर्वज्ञ* था (2 इतिहास 16:9क; जकर्याह 4:10)। इसके अलावा उसकी सात आंखों को ''परमेश्वर की सात आत्माएं

[अन्य शब्दों में पवित्र आत्मा[25]]" कहा गया "जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं।"[26] "सारी पृथ्वी" से उसके *सर्वव्यापक* होने का संकेत मिलता है। असहाय मेमना होने के बजाय वास्तव में वह प्रभुता करने वाला प्रभु था (देखें 17:14)!

फिर यूहन्ना ने देखा कि मेमने "ने आकर उसके दाहिने हाथ से, जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली[27]" (आयत 7)। (मुहर लगी पुस्तक और मानो वध किया हुआ मेमना खड़ा का चित्र देख।) इस प्रकार अगले अध्याय के आरम्भ में खुलने वाला पहली मुहर के लिए माहौल बन गया।

"वे गीत गाने लगे ...'तू ...योग्य है'" (5:8-14)

क्षमा का गीत (आयतें 8-10)

मुहर खुलने से पहले, अध्याय 4 से उन सबसे लेकर जो मंच पर थे, सारी सृष्टि महिमा के गीत गाने लगी: "और जब उसने पुस्तक ले ली तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेमने के साम्हने गिर पड़े;[28] और हर एक के हाथ में वीणा[29] और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं"[30] (आयत 8)।

यह ध्यान देने से पहले कि उन्होंने क्या गाया, यह विचार करना आवश्यक है कि वीणाएं क्या थीं। कुछ लोग यह जोर देते हैं कि मसीही आराधना में गाने के साथ साज़ों का इस्तेमाल स्वीकार्य है "क्योंकि स्वर्ग में वीणाओं का उल्लेख है।" परन्तु यहां 14 और 15 अध्यायों में वीणाएं का अर्थ धूप के अलावा और कुछ नहीं है; और वीणाओं का उल्लेख होना यदि मसीही आराधना में धूप जलाने को उचित ठहराता तो वीणाओं को भी नहीं ठहराता। ये वीणाएं सांकेतिक अर्थात "महिमा का प्रतीक" थीं।[31] हैनरी स्वेट ने लिखा है, "जैसे वीणाएं गाने [भजन गाने] का वैसे ही धूप कलीसिया की प्रार्थनाओं का संकेत है।"[32] संकेत से इस तथ्य को रेखांकित किया गया कि चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन प्रभु की महिमा करने को तैयार थे।

इसलिए फिर उन्होंने बलवन्त द्वारा पूछे गए प्रश्न कि "कौन योग्य है?" उत्तर देने के लिए अपनी आवाज़ें उठाईं:

> और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया;[33] और वे पृथ्वी पर राज करते हैं (आयतें 9, 10)।

उन्होंने परमेश्वर की महिमा की थी क्योंकि वह सृष्टिकर्त्ता था (4:11); अब उन्होंने मेमने की महिमा की, क्योंकि वह छुड़ाने वाला था। उनका यह गीत "*नया* गीत" था क्योंकि मेमने के वध से पहले इसे नहीं गाया जा सकता था![34]

स्वर्गीय गायकों ने पहले तो *छुटकारे का कारण* गाया: ''तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।'' हमें ''दाम देकर मोल'' लिया गया है (1 कुरिन्थियों 7:23; देखें 1 कुरिन्थियों 6:19, 20), और वह दाम यीशु का बहुमूल्य लहू था (प्रेरितों 20:28)! कुछ समय पहले मैंने किसी साम्प्रदायिक कलीसिया के विषय में पढ़ा था, जिसने गीतों की अपनी पुस्तक में से ''लहू'' शब्द इसलिए निकाल दिया क्योंकि उसके सदस्यों को यह शब्द ''नापसंद'' था। वह गीत स्वर्ग में कभी नहीं गाया जा सकता, क्योंकि स्वर्ग में तो लहू का वह गीत गाया जाता है, जिससे उद्धार मिलता है!

उन्होंने *छुटकारे की पहुंच* का गीत भी गाया: ''तू ने ... हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से ... परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।''[35] ''कुल'' हर परिवार के समूह को, ''भाषा'' हर भाषा बोलने वाले समूह को, ''लोग'' हर समाज के समूह को और ''जाति'' हर बिरादरी को कहा गया है। यीशु ''*सबके* लिए मरा'' (2 कुरिन्थियों 5:15)।

फिर उन्होंने *छुटकारे के परिणाम* का गीत गाया: ''और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक[36] बनाया; और वे पृथ्वी पर राज करते हैं।''[37] मसीह के द्वारा हम विशेष लोग बनते हैं: ''पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो'' (1 पतरस 2:9क)।

एक पल के लिए इस अद्‌भुत वाक्य ''वे पृथ्वी पर राज करते हैं'' पर विचार करें। मसीही लोग उस समय किस अर्थ में ''पृथ्वी पर राज'' करते थे और आज हम किस अर्थ में ''पृथ्वी पर राज करते'' हैं? यूहन्ना के समय में तो मसीही लोगों को जेलों में और भूखे शेरों के सामने डाला जाता था, निश्चय ही ऐसा *लगता* नहीं था कि वे राज कर रहे थे। आज समस्याओं के बीच घिरे हुए होने पर हो सकता है कि मुझे और आपको न लगे *कि* हम राज कर रहे हैं, परन्तु दिखाई देने वाली चीज़ आंखों का धोखा भी हो सकती है। पहली शताब्दी के सताव में निश्चय ही *लगता था* कि जैसे परमेश्वर अपने सिंहासन पर न हो। परन्तु अध्याय 4 में मसीही लोगों को आश्वस्त किया गया कि वह सिंहासन पर ही है। इसलिए हम फिर पूछते हैं, ''किस अर्थ में मसीही लोग पृथ्वी पर राज करते थे और करते हैं?''

मसीहियों के रूप में हम कई तरह से राज करते हैं: (1) हम मसीह का राज्य हैं (प्रकाशितवाक्य 1:6), जो कि कलीसिया है (मत्ती 16:18, 19)। (2) परमेश्वर हमारा पिता है (1 कुरिन्थियों 1:3) जिस कारण हम राजसी परिवार के लोग हैं। (3)मसीह इस समय राज कर रहा है (प्रेरितों 2:33-36; 1 कुरिन्थियों 15:25) और हम ''मसीह में'' हैं (2 कुरिन्थियों 5:17) इसलिए हम उसके राज में भागी हैं। (4) हमें बचाया गया है इसलिए अब मृत्यु का हम पर राज नहीं है; बल्कि हमें ''एक मनुष्य के अर्थात यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन में राज'' करने के लिए सामर्थ दी गई है (रोमियों 5:17ख; देखें आयतें 14, 21)।

यूहन्ना के समय के मसीही लोगों के दृष्टिकोण से, ''पृथ्वी पर राज'' शब्दों का अर्थ

सम्भवतया मुख्य रूप से *विजय* के लिए होगा। रोम ने मसीही लोगों पर राज करने और उन्हें कैसे कैसर की पूजा करने को विवश करने की कोशिश की थी, परन्तु मसीह की सामर्थ से मसीही लोगों ने अपने जीवनों और भविष्य को अपने हाथ से नहीं निकलने दिया था। वैसे ही जब मैं और आप अपने जीवन प्रभु को देते हैं तो वह जीवन द्वारा हमारे रास्ते में डालने वाली हर रुकावट ''पर जय पाकर'' हमें विजयी जीवन जीने में सहायता करता है।

भागीदारी का गीत (आयतें 11, 12)

अठाइस गायकों द्वारा छुटकारे का गीत गाने के बाद स्वर्गदूतों की टोली भी उनके साथ मिल गई। आयत 11 कहती है, ''और मैंने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों की चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों[38] और करोड़ों की थी'' (आयत 11)। प्राचीन समय में अंग्रेजी शब्द ''myriad'' का अर्थ ''दस हज़ार'' होता था, जिस कारण KJV में ''ten thousand times ten thousand , and thousands of thousands'' लिखा मिलता है। यह गिनती करने की कोशिश न करें कि स्वर्ग में कितने स्वर्गदूत हैं। ''दस'' (सम्पूर्णता का संकेत देती संख्या[39]) संख्या को असंख्य के साथ गुणा करने पर केवल यही संकेत मिलता है कि स्वर्ग का हर फरिश्ता वहां था!

''स्वर्गदूतों की इस अनगिनत संख्या'' (इब्रानियों 12:22) ने प्राचीनों और प्राणियों के साथ अपने स्वर मिलाए। उनके गीत[40] को ''समझौते का गीत'' कहा गया है। यद्यपि मसीह स्वर्गदूतों के लिए नहीं, बल्कि मनुष्यों के लिए मरा था, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के लोगों के उद्धार में स्वर्गदूतों की कोई रुचि नहीं है (लूका 15:10)। आरम्भ से ही छुटकारे की परमेश्वर की योजना को क्रियान्वित करने में स्वर्गदूतों का योगदान था।[41] आयत 12 में वे उस योजना में यीशु के योगदान के लिए उसकी सराहना कर रहे थे: ''और वे ऊंचे शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मेमना ही सामर्थ और धन, और ज्ञान, और शक्ति,[42] और आदर, और महिमा,[43] और धन्यवाद के योग्य है''[44] (आयत 12)। तीन भक्तिपूर्ण व्यवहारों के अलावा चार ईश्वरीय व्यवहारों का उल्लेख है, जो कुल मिलाकर सात बनता है, और यीशु की सिद्धता पर ज़ोर देता है![45] 4:11 में जो-जो गुण परमेश्वर का बताया गया है, वहीं यहां मेमने का बताया गया है, जो यीशु के ईश्वरीय होने का एक और प्रमाण है।

महिमा का गीत (आयतें 13, 14)

उस समय, महिमा के गीत में सारी सृष्टि साथ मिल गई: ''फिर मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को, जो उनमें हैं, यह कहते सुना ...'' (आयत 13क)। कविता की इस भाषा में जोर दिया गया है कि *हर जगह हर चीज़ ने* अपनी आवाज़ उठाई। इस पद से हमें पता चलता है कि जब हम प्रभु की महिमा गाते हैं तो हमारे मन स्वर्ग और पृथ्वी के उन सब लोगों के साथ मिल जाते हैं, जो उसे

सराहते हैं। आपकी मण्डली में चाहे ''दो या तीन उसके नाम से इकट्ठा'' होते हों (मत्ती 18:20), याद रखें कि आप संसार के सबसे शानदार गीत गाने वालों के साथ गा रहे हैं!

अध्याय 4 में दो गीत परमेश्वर के लिए और अध्याय 5 में दो यीशु के लिए थे। यह पांचवां गीत है और परमेश्वर और यीशु *दोनों* के लिए ही है: ''जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेमने का धन्यवाद,[46] और आदर, और महिमा, और राज्य,[47] युगानुयुग रहे '' (आयत 13 ख)।

गीत में महिमा गाते हुए, ''चारों प्राणी आमीन कहते रहे'' (आयत 14क; *NASB*)। सृष्टि में से सबने कहा, ''जो सिंहासन पर बैठा है उसका और मेमने का धन्यवाद,'' और प्राणियों ने कहा, ''आमीन!'' उन्होंने गाया, ''जो सिंहासन पर बैठा है उसका और मेमने का आदर'' और प्राणियों ने कहा, ''आमीन!'' उन्होंने घोषणा की, ''जो सिंहासन पर बैठा है उसकी और मेमने की महिमा'' और प्राणियों ने कहा, ''आमीन!'' उन्होंने पुकारा, ''जो सिंहासन पर बैठा है उसका और मेमने का राज्य युगानुयुग रहे'' और प्राणियों ने कहा, ''आमीन!'' ''यहोवा सर्वदा धन्य रहेगा! आमीन फिर आमीन'' (भजन संहिता 89:52)।

गीत खत्म होने पर पहले की तरह (4:10; 5:8) ''प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत किया'' (आयत 14ख)। ''यहोवा अपने पवित्र मंदिर में है; समस्त पृथ्वी उसके सामने शांत रहे'' (हबक्कूक 2:20)!

सारांश

गीतों की हमारी पुस्तकों में प्रकाशितवाक्य 5 के शब्दों और भावना की झलक मिलती है। उदाहरण के लिए, ''वर्दी आर्ट दाऊ'' शीर्षक से भाई टिलिट एस.टैडली का सुन्दर भजन है:

> मसीह हमारा छुड़ाने वाला स्तुति योग्य है;
> महिमा, सम्मान और सामर्थ के
> हमारे मन की श्रद्धा के योग्य;
> तू योग्य है! तू योग्य है!
>
> धन, आशिषें और सम्मान के योग्य,
> बुद्धि महिमा और सामर्थ के योग्य!
> पृथ्वी और स्वर्ग के धन्यवाद के योग्य![48]
> तू योग्य है! तू योग्य है!

क्या हम अध्याय 5 वाले गायकों के जोश वाले गीत गाते हैं? क्या इन गीतों से हमें वैसी आशिषें मिलती हैं, जो अध्याय 5 वाले गीतों में यूहन्ना को मिली होंगी। ब्रूस मैज़गर ने कहा है कि:

> और सर्वशक्तिमान परमेश्वर और मेमने की भलाई और करुणा की इन तेज से

> भरी पुष्टियों के यूहन्ना के कानों में गूंजने से वह अगले अध्यायों में बताए गए संसार में आतंक को छूट दिए जाने के बावजूद दृढ़ता से बना रह सका।[49]

जिम मैक्गुइगन ने ज़ोर दिया है कि ''यदि आप और मैं जो गाते और प्रार्थना करते हैं उसका आधा ही विश्वास कर ले, तो मसीह'' हमारे जीवनों और हमारे सामने आने वाली समस्याओं में ''अन्तर ले आएगा।''[50]

क्या आप प्रकाशितवाक्य 5 में बताई गई छुटकारे की महान सच्चाइयों पर विश्वास करते हैं ? यदि करते हैं तो मैं चाहता हूं कि आप अपना जीवन ''उस मेमने को'' जो आपके लिए ''वध किया गया था '' दे दें।[51] स्वयं को उसे देने से आपको इस जीवन में आशीष मिलेगी; फिर एक दिन आप सामर्थ से भरे कोरस और गीत गाते होंगे, ''जो सिंहासन पर बैठा है उसका और मेमने का धन्यवाद और आदर और महिमा और राज्य युगानुयुग रहे''!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

प्रकाशितवाक्य 5 पर अधिकतर प्रवचन यीशु पर (इस अध्याय की तरह ही) आधारित होते हैं। इस अध्याय को सरल रूप से (1) छुड़ाने वाला जिसे ढूंढ रहे थे (आयतें 1-4), (2) छुड़ाने वाले का विवरण (आयतें 5-7), (3) छुड़ाने वाले की महिमा (आयतें 8-14) में विभाजित किया गया है। मैरिल सी.टेनी ने इस अध्याय को ''मेमना और पुस्तक'' नाम देकर यह रूपरेखा सुझाई है: (1) समस्या बताई गई (आयतें 1-4), (2) व्यक्ति को ऊंचा किया गया (आयतें 5-7), महिमा की गई (आयतें 8-14)।[52] वारेन वियर्सबे ने अपनी प्रस्तुति ''वरशिप द रिडीमर'' में 1-4 आयतों को परिचय में बताकर, शेष आयतों की रूपरेखा इस प्रकार दी है: (1) जो वह है उस कारण (आयतें 5-7) (2) जहां वह है उस कारण (आयत 6) (3) जो वह करता है, उस कारण (आयतें 8-10), (4) जो वह था उस कारण (आयतें 11-14)। वियर्सबे ने उससे भी सामान्य रूपरेखा इस प्रकार दी: (1) मुहर की गई पुस्तक (आयतें 1-5), (2) वध किया हुआ मेमना (आयतें 6-10), (3) पुकार रहे लोग (आयतें 11-14)।[53]

यीशु पर केंद्रित होने का एक और ढंग अध्याय 5 के *गीतों* पर प्रचार करना होगा। इस प्रवचन का नाम ''हमारा छुड़ाने वाला मसीह महिमा के योग्य'' हो सकता है। इस प्रस्तुति में मसीह के जीवन से उदाहरण जोड़े जा सकते हैं।

यदि आपको ''कम भीड़ वाला मार्ग'' चुनना पसंद है तो आप यूहन्ना के आंसू दिखा सकते हैं: ''परमेश्वर सब आंसू पोंछ डालेगा।'' ऐसे प्रवचन में ज़ोर दिया जा सकता है कि (1) यूहन्ना क्यों रोया था और हमें क्यों रोना चाहिए और (2) परमेश्वर ने यूहन्ना के आंसू कैसे सुखाए और हमारे आंसू वह कैसे सुखाता है।

टिप्पणियां

[1]मैरिल सी.टैनी, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 566 में वारेन डब्ल्यू.वियर्सबे द्वारा दोहराया गया। [2]रेअ समर्स, *वर्थी इज़ द लैंब* (नैशविले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), viii. [3]"में" यूनानी उपसर्ग *epi* का अनुवाद है, जिसका मूल अर्थ "पर" या "ऊपर" है। इससे यह संकेत मिलता है कि दर्शन में पत्री परमेश्वर के फैले हुए हाथ पर थी। [4]पृष्ठों वाली पुस्तकें उस समय प्रचलन में नहीं थीं। कई अनुवादों में, जिसमें जेम्स मॉफट, *द न्यू टैस्टामेंट: ए न्यू ट्रांसलेशन* (न्यू यार्क: हार्पर एंड ब्रदर्स पब्लिशर्स, तिथि नहीं) सहित प्रकाशितवाक्य 5:1 में "scroll" ही है। [5]इससे हमें यहेजकेल 2:9, 10 वाली पत्री का ध्यान आता है, परन्तु यह यहेजकेल 2 वाली पुस्तक प्रकाशितवाक्य 10:2 वाली "छोटी सी पुस्तक" से अधिक मेल खाता है। (*ट्रुथ.फ़ॉर टुडे की* आगामी पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 3" में "मीठा और कड़वा" पाठ में 10:2 पर नोट्स देखें।) [6]हमें सम्भवतया बाहरी किनारे के साथ-साथ सात मुहर लगी पत्री की कल्पना करनी चाहिए। हो सकता है कि इस पत्री में सात अलग-अलग शीटें हों, जिनमें से हर शीट को अलग से मुहरबंद किया गया हो। यदि ऐसा था तो सातवीं शीट को लपेटकर मुहरबंद किया गया था, छठी शीट को सातवीं शीट के ऊपर लपेटकर मुहरबंद किया गया था और ऐसे ही अन्य शीटों को भी। इस प्रकार करने से हमारे लिए यह कल्पना करना आसान हो जाएगा कि पहली मुहर खुलने पर संदेश का पहला भाग कितना ज़बर्दस्त था, परन्तु इस विचार को मानने की कुछ हानियां भी हैं: यह पत्री बनाने का सामान्य ढंग नहीं था; और यदि ऐसा था तो यूहन्ना ने केवल बाहरी शीट पर मुहर ही देखी। [7]मुहर से किसी दस्तावेज़ को सुरक्षित किया जाता था, जैसे दवाई की बोतल को सील लगाकर सुरक्षित किया जाता है: सील टूटी हो तो हम उस दवाई को लेने से पहले सोचते हैं। मुहरों के महत्व पर अतिरिक्त चर्चा के लिए, इस पुस्तक में "तूफ़ान के बीच की शांति" वाले पाठ में 7:3 पर टिप्पणियां देखें। [8]यह तथ्य कि पत्री के दोनों ओर लिखा गया था और सात बार मुहर किया गया था, प्रकाशितवाक्य के *अंतिम होने* का संकेत भी हो सकता है। सदियों से लोग विशेष (अतिरिक्त) प्रकाशन पाने का दावा करते रहे हैं, परन्तु ऐसा प्रकाशन परमेश्वर के सम्पूर्ण (और पूर्ण किए गए) प्रकाशन के अलावा होगा (देखें 22:18, 19)। [9]एक और दिलचस्प विचार यह है कि पत्री एक *वसीयत* थी, क्योंकि रोमी वसीयतें सात मुहरों से मुहरबंद की जाती थीं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यीशु की अंतिम वसीयत और वाचा का भाग है, इसलिए यह विचार कुछ मानने योग्य है। परन्तु यदि पवित्र आत्मा के मन में यह रूपक था तो उसने इसके द्वारा काम नहीं किया। (देखें फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* भाग 1 [ऑस्टिन, टैक्सस: आर.बी.स्वीट कं., 1965], 55-56.) [10]सातवीं मुहर खोले जाने पर सात तुरहियां बजीं। सातवीं तुरही बजने पर सात कटोरे उण्डेले गए थे। सात मुहरों के खुलने से पूरा संदेश साफ हो गया था; इसलिए सात मुहरों वाली पत्री में ही पूरा संदेश था। इस पर और चर्चा के लिए, इस पुस्तक में "जब मसीही लोग प्रार्थना करते हैं" पाठ देखें।

[11]*द एम्पलिफाइड बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1965)। [12]"न स्वर्ग में, न पृथ्वी पर, न पृथ्वी के नीचे" शब्दों में केवल यह ज़ोर दिया गया कि "*चाहे कहीं का भी हो*" कोई व्यक्ति उस पुस्तक को खोलने के योग्य "नहीं" था। (आयत 3ख की तुलना फिलिप्पियों 2:10ख से करें।) [13]"पृथ्वी के नीचे" अधोलोक (अदृश्य संसार) को कहा गया है, जहां मृतक न्याय की प्रतीक्षा में हैं। (*ट्रुथ .फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" में "प्रभु पहचानता है" पाठ में टिप्पणी 13 देखें।) मृत्यु के समय यीशु का प्राण थोड़ी देर के लिए अधोलोक में गया (प्रेरितों 2:31); परन्तु नये नियम में बाद में कहा गया कि वास्तव में वह "पृथ्वी की निचली जगहों में" गया (इफिसियों 4:9)। AB में प्रकाशितवाक्य 5:3 में "पृथ्वी के नीचे [मृतकों के संसार अर्थात अधोलोक में]" है। [14]उदाहरण के लिए योएल 2:12; मरकुस 14:72; फिलिप्पियों 3:18. बहुत बार हम बेकार बातों पर दुखी होते हैं, परन्तु अनन्त महत्व की बातों से हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। [15]मैरिल सी.टैनी, *द बुक आफ़ रैवलेशन,* प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 28. [16]"मूल" शब्द के और अर्थ भी हैं। (1) "मूल" से "का स्रोत" होने का संकेत मिल सकता है। जहां तक मनुष्य जाति का सम्बन्ध है, यीशु का मूल दाऊद *में* था ...परन्तु

ईश्वरीयता के सम्बन्ध में, यीशु दाऊद *का* मूल है (वियर्सबे, 584)। (2) ''मूल'' शब्द हमें यशायाह 53:2 का स्मरण कराता है: ''क्योंकि वह ... अंकुर के समान और ऐसी जड़ के समान होगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले।'' यीशु के जन्म के समय दाऊद की संतान का सिंहासन सदियों से नहीं था यानी अब दाऊद के वंश का नामो निशान नहीं मिलता था। [17]विशेषकर यदि सुनने वाले यीशु की वंशावली से परिचित नहीं हैं तो आप याकूब से यीशु तक की पीढ़ियों को दिखाता चार्ट दिखा सकते हैं: याकूब ... यहूदा ... यिशै ... दाऊद ...यीशु। (देखें मत्ती 1: 1-16.) [18]यूनानी में मूलत: ''सिंहासन के मध्य में'' है। इस शब्दावली से मेमने की निकटता का ज़ोर उससे जो सिंहासन पर विराजमान है, दिया गया। [19] ''*मेमना* वध किया गया'' का अर्थ यह नहीं है कि इसमें कोई संदेह था कि वह मेमना वध किया गया था या नहीं। 9 और 12 आयतों में ''वध'' शब्द बिना ''मानो'' के है। ''मानो वध किया गया'' का अर्थ यह है कि मेमना ऐसे *लग रहा था जैसे* उसे वध किया गया हो क्योंकि उसे वध *ही किया गया था* । [20]जिम्मी एड्कॉक्स, ''विक्टरी थ्रू सरेंडर,'' *हार्डिंग यूनिवर्सिटी लैक्चर्स* (1992): 89।

[21]डब्ल्यू.ई.वाइन, मैरिल एफ.अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि. *वाइन 'स कम्पलीट एक्सपोज़िस्ट्री डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 342. [22]एड्कॉक्स, 89. प्रिंटिड प्रीचर स्कूल के छात्रों के लिए नोट: नर्सरी की एक प्रसिद्ध अमेरिकी कविता का आरम्भ इन शब्दों से होता है ''मेरी हैड ए लिटिल लैंब; इट्स फ्लीस वाज़ व्हाइट ऐज़ स्नो।'' ''मेरी का लिटिल लैंब'' शब्दों का खेल है, जिसमें यीशु और उसकी माता मरियम की बात है। [23]ब्रूस एम.मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड : अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 52. [24]एड्कॉक्स, 89 से लिया गया। [25]*टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में 1:4 पर टिप्पणियां देखें। यह बात कि पवित्र आत्मा को परमेश्वरत्व के इन दोनों सदस्यों के बीच निकट सम्बन्ध के लिए यीशु की आंखों के रूप में कहा गया है: पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान यीशु को ''आत्मा नाप-नाप कर नहीं'' मिला था (यूहन्ना 3:34); फिलिप्पियों 1:19 में पवित्र आत्मा को ''यीशु मसीह का आत्मा'' कहा गया है (देखें प्रेरितों 16:7)। [26]यीशु के पवित्र आत्मा को ''सारे जगत में'' भेजने की बात प्रेरितों के पास अपना पवित्र आत्मा भेजना ही है (यूहन्ना 14:16, 17, 26; 15:26; 16:7-14; प्रेरितों 1:8; 2:1-4, 16, 17, 33; 1 कुरिन्थियों 2:10) जिससे वे ''सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार'' कर सकें (मरकुस 16:15)। पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को ''पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर'' करना था (यूहन्ना 16:8)। [27]यूनानी में मूलत: यह है कि ''उसने आकर [इसे] *ले लिया है।*'' इससे यह संकेत मिलता है कि वह घटना वास्तव में कालांतर में होने का प्रतीक था। दानिय्येल को भी दर्शन में ''मनुष्य के संतान सा कोई'' अति प्राचीन के पास ऊपर आते दिखाई दिया था (दानिय्येल 7:13), जिस कारण अधिकतर विद्वान मानते हैं कि यह स्वर्गारोहण के बाद यीशु के महिमा पाने की बात है। प्रकाशितवाक्य 5:7 सम्भवतया उसी घटना की बात करता है। [28]प्राचीन दण्डवत करने के लिए ''मेमने के सामने गिर पड़े'' वैसे ही जैसे वे उसके सामने गिरे थे, जो सिंहासन पर विराजमान था (4:10)। आराधना क्योंकि केवल परमेश्वर की ही होनी है (19:10; 22:8, 9) इसलिए यह यीशु की ईश्वरीयता का एक और प्रमाण है। [29]''वीणा'' *kithara* का अनुवाद है जिससे हमें ''गिटार'' शब्द मिला है। नये नियम के समय में यह शब्द ''वीणा या सारंगी'' का अर्थ देता था (वाइन, 527)। [30]''पवित्र लोग'' का अर्थ ''पवित्र किए हुए'' या ''अलग किए हुए'' है। अंग्रेज़ी बाइबल में इसका अनुवाद ''saint'' हुआ है। ''saint'' या ''संत'' का अर्थ ''निष्पाप'' होना *नहीं* है। ''पवित्र लोग'' या ''संत'' मसीही लोगों को दिया जाने वाला एक और पदनाम है, चाहे वे कमज़ोर या पापपूर्ण मसीही क्यों न हों (देखें 1 कुरिन्थियों 1:1, 2)।

[31]जे.डब्ल्यू रॉबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 61. [32]हैनरी बी.स्वेट, *द अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैम्ब्रिज:मैक्मिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 80. [33]कई प्राचीन हस्तलेखों में यहां उत्तम पुरुष का इस्तेमाल है (''तू ने *हमें* बनाया है। ... और *हम* राज करेंगे। ...'')। कुछ विद्वानों का मानना है कि यहां संदर्भ अन्य पुरुष के बजाय उत्तम पुरुष की मांग करता है। [34]पुराने

नियम में ''नया गीत'' की बात की गई थी, जो मसीहा के आने पर गाया जाना था (उदारहण के लिए, यशायाह 42:8-10)। ''नया गीत'' पर और जानकारी के लिए *टुथ फ़ॉर टुडे* की अगामी पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 4'' में ''हे प्रभु, हमारी आंखें खोल'' पाठ में 14:3 पर टिप्पणियां देखें।[35]प्रकाशितवाक्य में ''कुल और भाषा और लोग और जाति'' वाक्यांश का इस्तेमाल पूरी मनुष्यजाति के लिए किया गया है। (चार शब्दों का इस्तेमाल किया गया है और ''चार'' वैश्विक अंक अर्थात सृष्टि का अंक है।) उदाहरण के लिए देखें 7:9; 11:9; 13:7; 14:6. हर बार अलग क्रम का इस्तेमाल किया गया है, जो पुस्तक के जटिल होने का संकेत है। [36]*टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में 1:6 पर टिप्पणियां देखें।[37]हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा को मानने वाले लेखकों के लिए , ''राज करते हैं'' को अंग्रेज़ी अनुवाद ''they *will* reign'' में भविष्यकाल का इस्तेमाल पृथ्वी पर मसीह के भावी राज्य का ''प्रमाण'' लगता है, जब (उनकी शिक्षा के अनुसार) मसीही लोग उसके साथ राज करेंगे। कई टिप्पणियां देना यहां न्यायसंगत होगा: (1) इस पद्य से वचन से सम्बन्धित समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जिससे विद्वान इस बात पर बंट जाते हैं कि वर्तमान काल का इस्तेमाल होना चाहिए या भविष्यकाल का। उदाहरण के लिए NASB में भविष्य काल का, जबकि इससे पहले के अनुवाद (ASV) में वर्तमानकाल का इस्तेमाल है। (2)भविष्यकाल का इस्तेमाल करने पर भी, इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि मसीही लोग वर्तमान में राज कर रहे हैं। जी.बी.केयर्ड ने लिखा है, ''कोई भी सुझाव कि मसीही लोग राज करते हैं अन्त में भविष्य से जुड़ा है ... इस बात के अलावा कि हमें दो बार बताया जा चुका है कि वे पहले ही राजा और याजक हैं'' (*ए कमेंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* [लंदन: एड्म एंड चार्ल्स ब्लैक, 1966], 77)। जिम मैक्गुइगन ने ध्यान दिलाया कि मसीही लोगों के *याजक* होने के सम्बन्ध में 20:6 में भविष्यकाल का इस्तेमाल किया गया और फिर पूछा, ''क्या इसका अर्थ यह है कि वे पहले से याजक नहीं थे? सचमुच नहीं। ये तो केवल मसीही लोगों को आश्वस्त करने का यहून्ना का ढंग है कि यीशु के साथ उनके सम्बन्ध को मृत्यु या सताव से बिगाड़ा नहीं जा सकता'' (*द बुक ऑफ़ रैवलेशन* [लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनेशनल बिब्लिकल रिसोर्सेस, 1976], 93)। (3) प्रकाशितवाक्य सिखाता है कि विश्वासी मसीही *वर्तमान में* राज कर रहे हैं (*टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में 1:5, 6 पर टिप्पणियां देखें), न्याय की प्रतीक्षा करने के कारण मरने के बाद राज *करते* रहेंगे (20:4-6) और फिर *अनन्तकाल तक* प्रभु के साथ राज करेंगे (22:5)।[38]''लाखों'' मूल शास्त्र में इस्तेमाल हुए शब्द का लिप्यांतरण है, जो कि ''असंख्य'' के लिए यूनानी शब्द का अलग रूप है।[39]*टुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''दस'' अंक के सांकेतिक महत्व पर चर्चा देखें।[40]इसके बावजूद कि कुछ लोग सिखाते हैं कि ''बाइबल कभी स्वर्गदूतों के गाने की बात नहीं करती'' मैं ''उनका गीत'' कहने से नहीं हिचकिचाता। इस बात के समर्थक यह कहते हैं कि आयत 12 में ''गाने'' के बजाय ''कहने'' शब्द है। दो अवलोकनों की बात करना न्याय संगत है: (1) कुछ ''कहना'' और इसे ''गाना'' में थोड़ा अन्तर है, क्योंकि स्वर के उतार-चढ़ाव और लय में मामूली अन्तर हैं (जो गाने के कुछ रूपों में भी नहीं मिलते)। (2) आयत 9 में ''कहना'' और ''गाना'' शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया गया है: ''और वे एक नया गीत *गाते* हुए *कह रहे* थे, ...'' (NASB)।

[41]उदाहरण के लिए देखें, मत्ती 1:20; 4:11; 24:31; 28:2; लूका 1:11, 26; 2:9-14; 15:10; 16:22; यूहन्ना 20:12; प्रेरितों 8:26; 10:3. [42]''शक्ति'' (या ''ताकत''; KJV) ''सामर्थ'' से इस बात में अलग है कि यह सामर्थ का *प्रकटावा* है। ऐसा हो सकता है कि किसी के पास सामर्थ हो परन्तु वह इसका इस्तेमाल न करे। [43]''महिमा'' यूनानी शब्द *doxa* का अनुवाद है, जिससे अंग्रेज़ी शब्द ''doxology'' निकला है, जिसका मूल अर्थ ''महिमा की बात'' है। ''Doxology'' आमतौर पर यह उस गीत के लिए इस्तेमाल किया जाता है जिसमें परमेश्वर की महिमा हो।[44]अनुवाद हुआ शब्द ''धन्यवाद'' उस शब्द से लिया गया है, जिससे अंग्रेज़ी शब्द ''eulogy'' (गुणगान) निकला है, जिसका मूल अर्थ ''तारीफ़'' है। यह शब्द महिमा करने या धन्य कहने दोनों के लिए इस्तेमाल हो सकता है, जिस कारण कुछ अनुवादों में यहां ''स्तुति'' के लिए शब्द मिलता है।[45]यूनानी शास्त्र में, सात गुणों वाली सूची के साथ यह संकेत देते हुए कि सात को पूर्ण के रूप में लिया जाए, केवल एक ही निश्चित उपसर्ग (''the'') का इस्तेमाल हुआ है। नये नियम में और कहीं भी इस सूची की हर बात यीशु के लिए मिलती है।[46]यूनानी शास्त्र में यह सुझाव देते हुए कि स्तुति के

पाठक केवल परमेश्वर और पिता हैं, इस सूची को निश्चित उपपदों (''the'') दिए हुए [illegible] शब्द लिए गए हैं। इस पुस्तक में प्रकाशितवाक्य 4:11 पर ध्यान दें। [47]अनुवाद हुआ शब्द ''[illegible]'' आयत 12 के ''[illegible]'' और ''मसीह'' शब्दों के अर्थ बताता है। इसमें मसीह के [illegible] की बात है। [48][illegible], ''[illegible]'' ([illegible]: [illegible] पब्लिशिंग कं., 1994)।'' [49][illegible], 54. [50][illegible], 90.

[51]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रचार के रूप में किया जाए तो अपने सुनने वालों को [illegible] (मरकुस 16:16) या वचन आने का आग्रह करें (याकूब 5:16)। [52]ईबिड, 25-29. [53]वारेन डब्ल्यू. वीयर्सबी, वीयर्सबीज़ एक्सपोज़िटरी आउटलाइन्स ऑन द न्यू टेस्टामेंट (व्हीटन, इलिनोइस : विक्टर बुक्स, 1992), 809-12.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. इस पुस्तक/पत्री का वर्णन करें जो यहूदा ने लिखी थी और उसके एक पाठ के सम्भावित मकसद पर चर्चा करें।
2. पाठ के अनुसार, यहूदा के पत्र उद्देश्य क्या था?
3. पाठ के अनुसार, यहूदा की [illegible] पुस्तक क्या थी? उसमें संदेश क्या था?
4. आपको क्या लगता है कि यहूदा ने क्यों लिखा था? क्या ऐसा समय आता है जब आपको लिखना चाहिए?
5. ''यहूदा के ... [illegible]?'' ''हनोक के मुख'' वाक्यांशों का क्या अर्थ था? ये वचन किसके लिए है?
6. इस समय का वर्णन करें, जो यहूदा ने दिया था और उसके [illegible] पाठ के सम्भावित मकसद पर विचार करें।
7. क्या [illegible] समय का संसार में किसी [illegible] पाठ दिलाता है कि परमेश्वर के ढंग हमेशा ढंगों से नहीं हैं? क्या [illegible] और समझ के लिए हमें परमेश्वर की सामर्थ्य के बचाव मनुष्य की समझ पर निर्भर रहना चाहिए?
8. क्या प्रकाशितवाक्य में वर्णित धूप इस बात का प्रमाण है कि हम मसीही आराधना में धूप जलाना चाहिए? क्या प्रकाशितवाक्य में वीणाओं के उल्लेख से यह पता चलता है कि हम मसीही आराधना में संगीत का इस्तेमाल करना चाहिए?
9. अध्याय 8 के अंत बढ़े गीतों पर विचार और मनन करें। [illegible] गान को [illegible] करें। [illegible] के आराधना। [illegible] करें। [illegible] पाठ को [illegible] है, [illegible] शब्दों का है।
10. [illegible] गीतों में [illegible] पर [illegible] क्या लगती हैं?

सात मुहरों वाली पत्री (5:1)

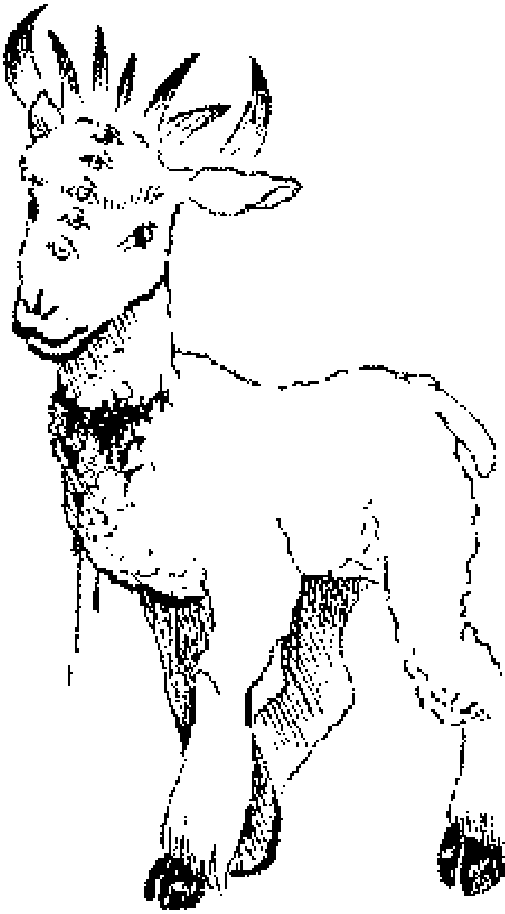

मानो वध किया हुआ मेमना खड़ा (5:6)

मुहर लगी पुस्तक और मानो वध किया हुआ मेमना खड़ा (5:1-6)